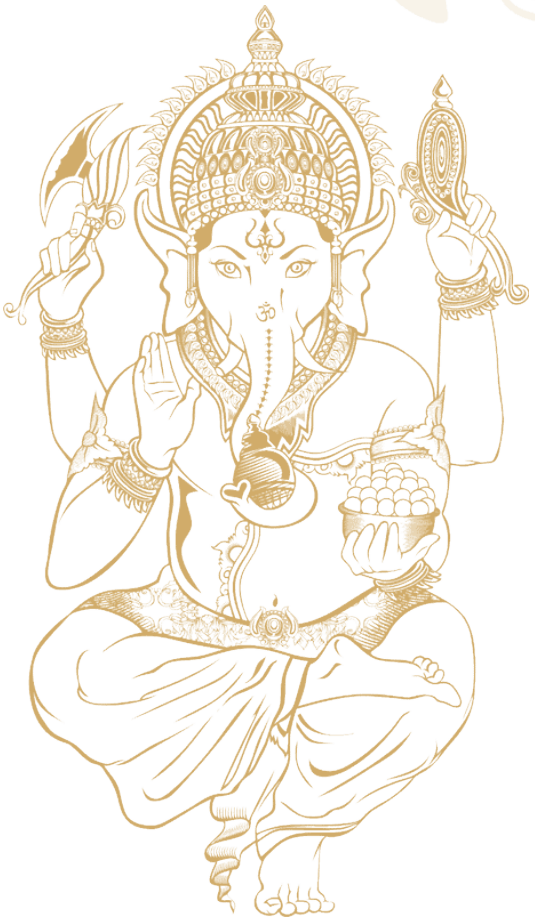

Mr Rastogi

28 Mar 2026

08:19 AM

Noida

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121893101**

तिथि 28/03/2026 **समय** 08:19:00 **वार** शनिवार **स्थान** Noida **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:31
अक्षांश 28:40:00 उत्तर **रेखांश** 77:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:20:54 घं
वेलान्तर	00:05:06 घं
सूर्योदय	06:15:26 घं
सूर्यास्त	18:35:48 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	10
नक्षत्र	पुष्य
योग	सुकर्मा
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हो-होशियार
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

शनि 5वर्ष 3मा 1दि

शनि

28/03/2026
29/06/2031

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	28/03/2026
राहु	16/12/2028
गुरु	29/06/2031

योगिनी

धान्या 0वर्ष 9मा 29दि

धान्या

28/03/2026
25/01/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	28/03/2026
संकटा	26/10/2026
मंगला	25/11/2026
पिंगला	25/01/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:05:21	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			13:12:53	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	राहु	मित्र राशि	1.49	मातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			12:58:43	कर्क	पुष्य	3	शनि	राहु	स्वराशि	1.28	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	25:51:09	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	केतु	सम राशि	1.37	आत्मा	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			16:37:53	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	सम राशि	1.18	भ्रातृ	ज्ञाति	मित्र
गुरु			21:19:28	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.19	अमात्य	धन	अतिमित्र
शुक्र			02:37:53	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	सम राशि	1.44	कलत्र	कलत्र	विपत
शनि		अ	10:50:19	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	सम राशि	0.96	ज्ञाति	आयु	जन्म
राहु			14:31:39	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			14:31:39	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

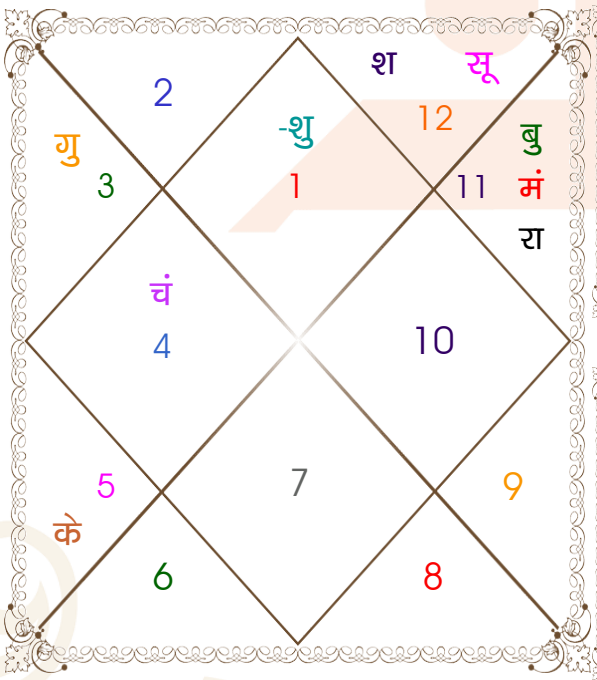

चन्द्र कुंडली

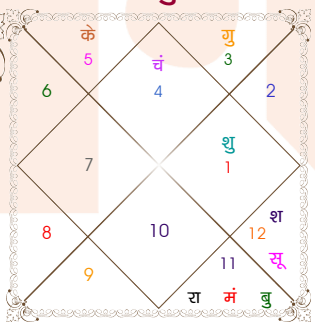

नवमांश कुंडली

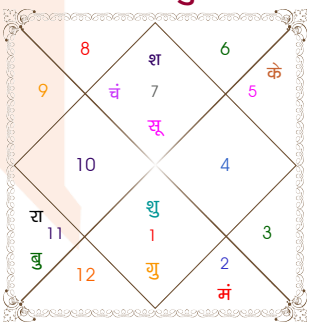

सर्वाष्टकवर्ग

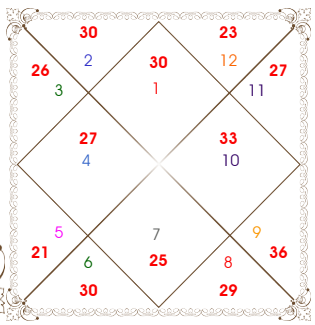

दशमांश कुंडली

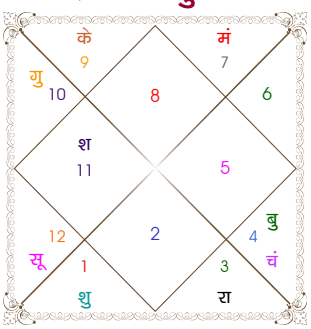

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पुष्य नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी मध्य, देव गण, वर्ण विप्र, वर्ग मेष तथा योनि मेष होगी। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हो" अक्षर से होगा।

आप अपने जीवन में देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त रहेंगे। आप अत्यन्त ही बुद्धिमान होंगे तथा बुद्धिमतापूर्ण ढंग से अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों को आप जानने वाले होंगे। आप देखने में सुन्दर रूपवान तथा जीवन में समस्त सुखों के उपभोग कर्ता होंगे। साथ ही आप सभी लोगों के स्नेह पात्र या प्रिय भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप की कफ से युक्त प्रकृति होगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

धार्मिकता के भाव से आप नैसर्गिक रूप से युक्त रहेंगे। ईश्वर में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा शान्तचितवृति से ही अपने कार्य कलापों को सुसम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप पुत्र संतति से भी युक्त रहेंगे जिनकी संख्या अल्प रहेगी।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरूष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

ब्राहमण तथा देवताओं के आप अनन्य भक्त रहेंगे। इनके प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा आदर का भाव विद्यमान रहेगा। धन का आपको जीवन में कम ही अभाव रहेगा। आप राज्य अर्थात् उच्चाधिकारी या मंत्रियों के प्रिय रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग को प्राप्त करेंगे। साथ ही आप बंधुवर्ग के भी हितैषी रहेंगे तथा उनसे भी सहयोग प्राप्त करते रहेंगे।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

शरीर आपका सुन्दर दर्शनीय तथा सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा एवं सामान्य तथा रोगों का भी अभाव रहेगा। माता पिता के प्रति आपका पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा भाव रहेगा तथा नित्य उनकी सेवा करने में यत्नशील रहेंगे। धर्म के अनुसार भी आप कार्य सम्पन्न करते रहेंगे एवं समाज में आप विनयशील स्वभाव के माने जाएंगे। समाज से आपको पूर्ण मान तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही आप नाना प्रकार के धन वाहनादि से भी युक्त रहेंगे।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आप का स्वास्थय मध्यम रहेगा। आपके समस्त कार्य चतुराई से सम्पन्न होंगे तथा समाज में आप धनाढ्य पुरूष कहलाएंगे। वीरता तथा निर्भयता के गुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सभी लोग न्यूनाधिक आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। धार्मिक भावना से परिपूर्ण आप जीवन में धर्मानुपालन में भी तत्पर रहेंगे। गुरूजनों के आप विशेष स्नेहपात्र होंगे तथा उनसे आपको नित्य सहयोग तथा आशीर्वाद मिलता रहेगा। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी। कभी कभी आपके मन में क्रोध के भाव की बहुलता भी दिखाई देगी तथा आप अपने को दुःखी भी अनुभव करेंगे। आपके समस्त मित्र अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त रहेंगे। आप कई कार्यो अथवा कलाओं में भी निपुणता प्राप्त करेंगे। आपका शारीरिक बल भी मध्यम ही होगा। अपने घर से बाहर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से रहना पसन्द करेंगे। करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।

प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप वात तथा कफ मिश्रित प्रकृति के पुरुष होंगे तथा आपका रूप भी सुन्दर एवं अलौकिक तेज से युक्त रहेगा। आप अपने परिश्रम से अधिक मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा धनवान कहलाने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के आप पूर्ण भक्त होंगे तथा इनके प्रति श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रखेंगे। कुलीन जनों के प्रति आप विशेष सहयोग तथा सेवा भाव रखेंगे एवं इसको व्यावहारिक रूप में परिणित करेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादि शास्त्रों के अध्ययन में भी आपकी रूचि जागृत रहेगी तथा परिश्रम से इन के ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अन्य कार्यों तथा कलाओं में भी आप प्रवीण हो सकते हैं। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा फूलों की सुगन्ध एवं जल विहार से आप अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। इसके अतिरिक्त आप समाज के एक ख्याति प्राप्त पुरुष भी होंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

स्त्री के पूर्ण रूप से वश में रहेंगे। आपके पास मित्रों की बहुलता रहेगी तथा जलक्रीड़ा के आप प्रिय होंगे। आप बहुत से भवनों का निर्माण करवाएंगे या बहुत से मकानों का स्वामित्व भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका कद समान्य होगा तथा आप वक्रगति से शीघ्र चलने वाली होंगे। साथ ही पुत्र संतति भी आपकी अल्प मात्रा में ही होगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकटि्र्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप नाना प्रकार के द्रव्यों व सम्पतियों को प्राप्त करने वाले होंगे तथा आप ज्योतिष शास्त्र के भी ज्ञाता होंगे। आप अपने जीवन में सुख दुःख उत्थान पतन तथा उन्नति अवनति से युक्त रहेंगे। इस प्रकार चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षयवृद्धि को प्राप्त करेंगे। आप केवल स्नेह के द्वारा ही वश में किये जा सकेंगे तथा दबाव तथा बल से आप कोई भी कार्य सम्पन्न करने को तैयार नहीं होंगे। आप मित्रों को हादिक सम्मान प्रदान करेंगे अतः मित्र वर्ग के मध्य प्रिय रहेंगे। आप जीव पालने, उद्यान बगीचों तथा जलाशय के निर्माण में सदा तत्पर एवं रूचिशील रहेंगे।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य हमेशा आपका साथ देगा तथा आपके समस्त कार्य चंचलता से नही अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे एवं आप मकान के स्वामी भी होंगे। आप अपने समय को अधिकांशतः भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत करेंगे। विनयशीलता आपके स्वभाव का प्रमुख गुण रहेगा।

आप कृतज्ञता के गुण से भी सम्पन्न रहेंगे तथा अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उनका हार्दिक आभार मानेंगे। इसके साथ ही आप उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। आप सत्य के पालनकर्ता तथा प्रिय एवं मधुर वचन बोलने के लिए अपने समाज में प्रख्यात रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथा मधुरता से युक्त रहेगी जिसे सुनकर दूसरे लोग प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त सरल होगी तथा आप सुगमता से अपने विचारों को प्रकट करने में समर्थ रहेंगे तथा अन्य जनों के विचारों को भी सुगमतापूर्वक ग्रहण करेंगे। आप अल्प शुद्ध तथा सात्विक भोजन के प्रेमी होंगे। गुणों के विषय में आपका ज्ञान विस्तृत रहेगा तथा अपने आप भी विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर तथा स्वस्थ चित्त रहेंगे तथा दानशीलता की प्रधानता भी आपके स्वभाव में विद्यमान रहेगी एवं समयानुसार यथा शक्ति आप इस भावना का प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आपकी प्रकृति सादगी से पूर्ण होगी तथा दिखावटीपन तथा भौतिकता से आप दूर ही रहेंगे। इसके साथ ही आप एक श्रेष्ठ विद्वान भी हो सकते हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण उत्साह का भाव नैसर्गिक रूप से आपमें विद्य मान रहेगा। आप युद्धविद्या में निपुण तथा पराक्रमी होंगे तथा समाज में अपना प्रभाव प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे तथा आजीवन इनसे युक्त रहेंगे। आप हमेशा अन्य जनों के हितकार्यों को करने के लिए तन, मन, धन से तत्पर रहेंगे। जिससे समाज में आपको उचित मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त

रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि का चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी तक 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघातयोग तथा नागकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार का उपवास भी करना चाहिए। साथ ही सफेद मोती, चांदी, सफेद वस्त्र, मिश्री चावल इत्यादि पदार्थो को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। इसके साथ ही चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे अशुभ फल कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।